

हिमाचल प्रदेश में सड़क दुर्घटनाओं से संबंधित कुछ आंकड़े-

क्रमांक	वर्ष	सड़क दुर्घटनाएँ	मारे गए व्यक्ति	घायल व्यक्ति
1	2001-02	2,226	804	3,798
2	2002-03	2,830	695	3,917
3	2003-04	2,607	867	4,188
4	2004-05	2,758	920	4674
5	2005-06	2,807	863	4833
6	2006-07	2,756	886	4688
7	2007-08	2,906	945	4867
8	2008-09	2,846	838	4637
9	2009-10	3,409	1196	5560

स्रोत: पुलिस विभाग, हि०प्र०, सड़क परिवहन एवं राजमार्ग, भारत सरकार तथा समाचार पत्र

हिमाचल में विगत तीन वर्षों में सड़क दुर्घटनाओं के चलते 3500 से अधिक लोग मारे गए। इनमें से लगभग 98% सड़क दुर्घटनाएँ शराब पीकर वाहन चलाने, मानवीय गलतियों व लापरवाही के कारण हुईं।



जनहित में जारी इस विवरण पुस्तिका में प्रस्तुत आंकड़े व तथ्य विभिन्न स्रोतों से लिए गए हैं। अतः इस विवरण पुस्तिका को इसमें प्रस्तुत किसी भी जानकारी के वास्तविक स्रोत के रूप में संदर्भित न किया जाए।



सड़क दुर्घटना या आपात स्थिति में सहायता हेतु
108 डायल करें।

जीवन का न कोई विकल्प
सड़क सुरक्षा का लें संकल्प।

अधिक जानकारी हेतु कृपया सम्पर्क करें:



हि० प्र० राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण
हिमाचल प्रदेश सचिवालय,
शिमला 171002
टेली-फैक्स- 0177 2625657
ईमेल- sdma-hp@nic.in
वैबसाईट- www.hpsdma.nic.in

भारत सरकार - यू०एन०डी०पी० आपदा न्यूनीकरण कार्यक्रम (2009-2012)
के अंतर्गत हि०प्र० राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा जनहित में जारी

हिमाचल प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण
हिमाचल प्रदेश

सड़क सुरक्षा सूत्र

जीवन अनमोल है,
सावधानी से वाहन चलाएं।



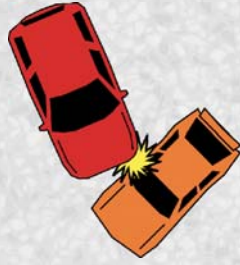
चौपहिया वाहन चलाते समय
सीट बेल्ट अवश्य पहनें।



मोटरसाइकिल / स्कूटर हमेशा
हेल्मेट पहनकर ही चलाएं।

एक नजर सड़क दुर्घटनाओं पर:

- विश्व में प्रतिवर्ष सड़क दुर्घटनाओं के चलते लगभग 12 लाख लोग मारे जाते हैं जिनमें से लगभग आधे (46%) संवेदनशील सड़क प्रयोगकर्ता, जैसे पदयात्री, साइकिल या मोटर साइकिल चलाने वाले होते हैं।
- विश्व में सड़क दुर्घटनाओं के चलते सर्वाधिक मौतें भारत में होती हैं।
- विश्व में सड़क हादसों के चलते होने वाली मौतों में से 90% से अधिक कम व मध्यम आय वाले देशों में होती हैं, जबकि इन देशों में वाहनों की संख्या विश्व के कुल वाहनों के आधे से भी कम है।
- सड़क दुर्घटनाओं के चलते भारत में प्रतिदिन औसतन 360 व्यक्ति (हर घंटे 15 व्यक्ति) मारे जाते हैं व 1400 व्यक्ति घायल हो जाते हैं।
- सड़क दुर्घटनाओं में मरने वालों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। 2009 में 1 लाख 26 हजार मौतें सड़क दुर्घटनाओं के चलते हुईं।
- आवश्यक कदम न उठाए जाने की स्थिति में सड़क दुर्घटनाओं के चलते विश्व में प्रतिवर्ष लगभग 20 लाख लोगों के मारे जाने का अनुमान है।



सड़क दुर्घटनाओं का आयु से सम्बन्ध:

- सड़क दुर्घटनाओं में मारे जाने वाले या घायल होने वाले लोगों में 30 प्रतिशत से अधिक संख्या बच्चों और 25 वर्ष से कम आयु के युवाओं की होती है। सड़क हादसों में अधिकतर कम उम्र के लोगों की जानें जाती हैं।
- छोटी उम्र से ही सड़क दुर्घटनाओं में शामिल रहने की संभावना महिलाओं की तुलना में पुरुषों में अधिक होती है। युवाओं में 25 वर्ष से कम आयु के पुरुष चालकों की सड़क दुर्घटनाओं में मारे जाने की संभावना युवा महिला चालकों से तीन गुना अधिक रहती है।

सड़क दुर्घटनाओं का गति से सम्बन्ध:

- 30 कि०मी० प्रति घंटा या इससे कम की गति से चलती कार से दुर्घटना होने पर पदयात्रियों की जान बचने की संभावना 90% तक होती है, परंतु 45 कि०मी० प्रति घंटा या इससे अधिक की गति से चलते वाहन से दुर्घटना होने पर पदयात्रियों की जान बचने की संभावना 50% से भी कम होती है।
- 30 कि०मी० प्रति घंटा की निर्धारित गति वाले क्षेत्र दुर्घटनाओं के जोखिम को कम करने में सहायक हैं। ऐसे क्षेत्र उन स्थानों के लिए संस्तुत किए जाते हैं जहां संवेदनशील सड़क प्रयोगकर्ता अधिक होते हैं (जैसे आवासीय क्षेत्र, विद्यालयों के आस पास)।

सड़क दुर्घटनाओं सम्बन्धी जोखिम को घटाने के लिए कुछ उपाय:

दुपहिया वाहन चालकों के लिए—

- ISI द्वारा अनुमोदित हैल्मेट पहनकर ही दुपहिया वाहन चलाएं। मोटर साइकिल या स्कूटर चलाते समय हैल्मेट पहनने से जान जाने का जोखिम लगभग 40% तक व गंभीर रूप से घायल होने का जोखिम 70% से अधिक तक कम हो सकता है।
- लाल, पीले या नारंगी जैसे उजले रंग के कपड़े पहन कर दुपहिया वाहन चलाएं जिससे अन्य वाहनों के चालक आसानी से आपको देख पाएं।
- मोड़ों व चौराहों पर विशेष सावधानी बरतें। मोटर साइकिल सवार लोगों के साथ होने वाली दुर्घटनाओं में से एक—तिहाई चौराहों पर ही होती हैं।
- मोटर साइकिल से जुड़े सड़क हादसों में अधिकतर का कारण तेज गति व नियंत्रण खो देना होता है। अतः स्थिति के अनुसार उचित गति से व पूरे नियंत्रण के साथ ही मोटर साइकिल चलाएं।

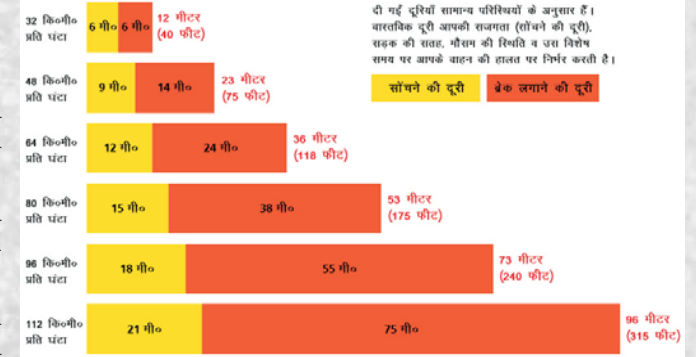


चौपहिया वाहन चालकों के लिए—

- वाहन चलाते समय मोबाइल फोन, आई-पॉड आदि का प्रयोग बिल्कुल न करें व अपना ध्यान सिर्फ सड़क पर रखें।
- वाहन चलाते समय अपनी सुरक्षा के लिए सीट-बैल्ट अवश्य पहनें। सीट बैल्ट पहनने से वाहन में आगे बैठे व्यक्तियों की जान जाने का जोखिम 40-50% तक, तथा पीछे बैठे व्यक्तियों की जान जाने का जोखिम 25-75% तक कम हो जाता है।
- पहाड़ी क्षेत्रों में यात्रा करते समय घुमावदार व संकरी सड़कों पर वाहन की गति अत्यधिक नियंत्रित रखें, भले ही ऐसी सड़कों पर यातायात कितना ही कम क्यों न हो।
- भीड़-भाड़ वाले क्षेत्रों में वाहन धीमी गति से चलाएं, आपका कोई परिचित भी आपके वाहन की चपेट में आ सकता है।
- वाहन चालक सदैव सुनिश्चित करें कि यात्रा शुरू होने से पूर्व वे अपनी नींद पूरी कर चुके हों। नींद आपकी इच्छा पर निर्भर नहीं करती, यह एक शारीरिक जरूरत है।
- आगे व पीछे चल रहे वाहन से उचित दूरी बनाए रखें व चौकन्ने रहें, दुर्घटनाएँ सिर्फ आपकी चूक या लापरवाही से ही नहीं होतीं।



एक विशेष गति से चलते वाहन को अचानक रोकने के लिए कुछ समय लगता है, जिसके दौरान वाहन एक निश्चित दूरी तक आगे बढ़ जाता है। यह दूरी वाहन चालक के सजग होने (वाहन रोकने के बारे में सोचने) से लेकर ब्रेक लगाने के बाद वाहन के पूरी तरह से रुकने तक तय कर ली जाती है। अतः वाहन की गति यातायात की उपयुक्त स्थितियों के अनुसार ही रखनी चाहिए। विशेष परिस्थितियों में वाहन को अचानक रोकने के लिए कम से कम कितनी दूरी की आवश्यकता होती है यह नीचे दिये गए चित्र द्वारा समझा जा सकता है—



बस / ट्रक चालकों के लिए—

- बसों में भार क्षमता से अधिक सवारियाँ न बैठाएँ। बस दुर्घटनाएं मुख्यतः ओवरलोडिंग व तेज गति की वजह से ही होती हैं।
- साथ चलते वाहनों को ओवरटेक करने में जल्दबाजी न करें। आगे निकलने के लिए सही स्थिति व अवसर की प्रतीक्षा करें तथा पर्याप्त स्थान होने पर ही ओवरटेक करें।
- तीव्र मोड़ों पर वाहन की गति कम रखें व हॉर्न का प्रयोग करें।



पदयात्रियों के लिए—

- सड़क किनारे चलते हुए या सड़क पार करते समय कानों से इयरफोन निकाल दें।
- सड़क पार करने में जल्दबाजी न करें, हमेशा सड़क के दोनों तरफ देखने के बाद ही सड़क पार करें।
- सड़क पर चलते हुए मोबाइल फोन पर बात या SMS न करें। कुछ पढ़ते हुए सड़क पर चलना भी जोखिम भरा साबित हो सकता है।

